कवित्वरत्नाकर

प्रथम भाग

जिसको

श्रीयुत विद्वज्जन जेगीयमान सत्कीर्त्ति
कालिन् ए. आर. औनिङ्ग साहब एम, ए,
प्राचीनडैरकृर वीरेश की अनुमति से
ज़िलअ स्कूल खीरीके पद्ममाध्यापक
पण्डित मातादीन मिश्र ने बड़े परिश्रम से
नवीनऔरप्राचीन भाषाकाव्यग्रन्थोंसे सङ्ग्रहकिया

और

श्रीमद्गुणिजन मानसोल्लासक
श्रीयुत जान्, सी, नेसफील्ड साहब एम, ए,
अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश की आज्ञा से
पुस्तकालयों के साहित्य के हेत

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में
पण्डित रामरत्नवाजपेयि के प्रबन्ध से छपा ॥
जनवरी सन १८७६ ई०

कवित्तरत्नाकर

प्रथम भाग

जिसको
श्रीयुत विद्वज्जन जेगीयमान सत्कीर्त्ति
कालिन् ए, आर, औनिङ्ग साहब एम, ए,
प्राचीनडैरकृर वीरेश की अनुमति से
ज़िलअ स्कूल खीरीके पञ्चमाध्यापक
पण्डित मातादीन मिश्र ने बड़ परिश्रम से
नवीनऔरप्राचीन भाषाकाव्यग्रन्थोंसे सङ्ग्रहकिया
और

श्रीमद्गुणिजन मानसोल्लासक
श्रीयुत जान्, सी, नैसफील्ड साहब एम, ए,
अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश की आज्ञा से
पुस्तकालयों के साहित्य के हेतु

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में
पण्डित रामरत्नवाजपेयि के प्रबन्ध से छपा॥
जनवरी सन् १८७६ ई०

प्रथम भाग कवित्वरत्नाकर का सूचीपत्र ॥

नम्बर	कवि का नाम	काव्य का विषय	पृष्ठ	पंक्ति
११	नारायण ..	बचारकर लोभकरना	११	३
१२	तुलसी दास ..	संसार अनित्य है...	२०	३
१३	शिव प्रसाद ..	तथा	२०	१४
१४	बंशीधर ...	तथा	२१	१५
१५	देव ..	तथा	२२	२
१६	गिरिधर ...	व्यवहारिक उपदेश	२३	५
१७	नरोत्तम ..	ऐश्वर्य में दीन मित्र पर प्रेम ...	२८	३
१८	केशव ..	रामचन्द्र और रावण आदिक का युद्ध	३२	५
१९	भोला नाथ ...	स्वामी की शुभ चिन्तकता ...	५१	१०
२०	नारायण ..	यत्न की चिमत्कारी	५८	१२
२१	सबल सिंह ...	द्यूत कर्म्म में हानि	६९	२

श्री सच्चिदानन्दमूर्त्तयेनमः ॥

कवित्वरत्नांकर

प्रथम भाग ॥

——oo——

श्री सर्व गुणाकर कृपा सागर परमात्मा
की बन्दना ॥

सवैया——शुकदेव ।

आलसनीदमें मातीसदा अरुउद्यमहीन दुबेरखवैया ।
प्यासलगैनहिंपानिभरैजो पासधरो उठिकैन पियैया ॥
ऐसे निकम्मन के शुकदेव कृपा के धाम हो पेट भरैया ।
भोरतेसांझअरुसांझतेभोरलौंमोसोंकुपूतनतोसोदेवैया ॥

कुण्डलिकाछन्द——गिरिधर ॥

नैया मेरी तनकसी बोझी पाथर भार ।
चहुंदिश अति भौंरैं उठत केवट है मतवार ॥
केवट है मतवार नाउ मंझधारहि आनी ।
आंधी चलत उडण्ड तेहू पर बरसे पानी ॥

कहिंगिरिधर कविराय नाथहै तुमहि खिवैया।
उठहि दया को डांड़ घाट पर आवै नैया ॥
उरभी नाव कुठोरमें परी भंवर विच आय।
दीनबन्धु अब तोहि विन को करिसकै सहाय॥
को करिसकै सहाय हवै करिया विन नाउर।
आंधी उठी प्रचण्ड देखि अति आयो ताउर॥
कहिंगिरिधरकविरायनाथबिनकबकोहिसुरभी।
ताते हाहा करौं मोरि विपदा में उरभी॥

दोहा——रहीम॥

सम्पति सम्पति जानिकै सबको सब कुछ देइ।
दीन बन्धु विन दीनकी को रहीम सुधि लेइ॥
समय दशा कुल देखि के लोग करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथको तुम विन को भगवान॥

बरवाछन्द——जलील॥

जब जिहि परल बिपतिया तुमहिं उबार।
अब कस तार लगायहु हमरी बार॥
अधम उधररन नमवां सुनि कर तोर।
अधम काम कौ'बटिया गहि मन मोर॥

मन बच कायक निशि दिन अधमी काज।
करत करत मनु भरिगा हो महराज॥
लोग कुटुंब जन मितवा सबहि घिनाहिं।
अस कहुं ठौर न देखिय जहं हम जाहिं॥
सुरति आइ गइ तुम्हरी अस जिय जान।
स्वामि मोर बड़ समरथ जिय हरषान॥
सबहि अलंग ते मनु हटि तुम्हरी ओर।
अरज करहि सुनि लीजहि तनि करि कोर॥
तनक दया के चितये मोर बचाउ।
जल ऊपर चींटी को तिनुकइ नाउ॥
विलग राम कर वासी मीर जलील।
तुम्हरि शरण गहि गाढ़े ए निधि शील॥

सवैया—गुरुदत्त॥

परि पांचहु भूतन के गणमें गुरुदत्त चहूंदिशि डोलतहो।
अन्तरहीमें निरन्तर हो पर तौ नहिं अन्तर खोलतहो॥
हरषोई सदा परखो न तुम्हें सबकेगुनऔगुन तोलतहो।
हम बूझतहैंकिहमारेहियेतुम कौनमहाप्रभुबोलतहो॥

——

राम प्रसाद कवि की पत्री मुन्शी अयोध्या प्रसाद को।

चौपाई ॥

सिद्धि श्री सर्वो उपमान।
योग्य यथारथ परम सुजान॥
श्रीपत्री विद्या गुण आगर।
अवध प्रसाद शील के सागर॥
लिखी राम परसाद सुहाई।
यथा योग पहुंचे मन भाई॥
यहां क्षेम है कुशल तिहारी।
निशिबासर चाहत सुखकारी॥
दीन दयानिधि परम पिरीते।
बिन दर्शन बहुते दिन बीते॥

दोहा ॥

कहा करीं विधि नहिं दिये पह्व मोहिं यहि वार।
पलकन तरु मैं सुकृत नित होत्यों तुम्हें निहार॥
समाचार अब आपने लिखैां तुम्हें चितु लाय।
पढ़ि लीजे कीजे दया दीजे वजह दिवाय॥

कुण्डलिका ॥

वारीविशमा फतेपुर काकोरी मोहान ।
दरियाबाद मिलाय के खैराबाद निदान ॥
खैराबाद निदान क़दीम वजह मामूली ।
कहै रामपरसाद सालहासाल वसूली ॥
स्वामी अवध प्रसाद दान के अवर बहारी ।
वेगि डहडही करौ मेरे कुलकी फुलवारी ॥

सवैया ॥

घेरिलियो वृद्धापनआनिके पावं चलाये चलै न हमारे ।
आननसें स्वर शुद्धकढ़ै नहिं कानन बातसुनैांनपुकारे ॥
कम्पतहै सब अङ्ग दयानिधि नैन भएदोउ नीरपनारे ।
दै अपनीअरजी पठयोहम गोकुलचन्दको पासतुम्हारे ॥
मोहिंरिसाय सुनायकही अंगनेजे बड़े फरजन्द हमारे ।
देखिबो क्योंकर ह्वैहैं वसूल तुम्हें रुपया इमसाल करारे ॥
छोड़िकेआसरोऔरनको यश गावतआपकोसांझसकारे ।
दै अपनी अरजी पठयो हमगोकुलचन्दको पास तुम्हारे ॥

सत्शिक्षा—उपदेश ॥

दोहा—श्रीलाल ॥

देबो यशको मूल है याते देबो ठीक।
परदेबे में जानिलो दुख कबहूं नहिं नीक॥
सञ्चय करिबो है भलो सो आबे बहुकाम।
पाप न सञ्चय कीजिये जो अपयश को धाम॥
जड़ कबहूं नहिं काटिये काहू की मनधारि।
पापवृक्ष की जर कटी भलो एक निरधारि॥
भलो होत नहिं मारिबो काहू को जग माहिं।
भलो मारिबो क्रोध को ता सम नर रिपु नाहिं॥
जोरी करि नहिं रोकिये काहू को मनमीत।
बने तो मन को रोकिये याते होइ विनीत॥
सङ्ग सदा सुखदान है करिये सज्जन देख।
कबहु न करिये दुष्टको सङ्ग यही अवरेख॥
करै हिरस जो काहु की तामें लह नर हान।
पर विद्याकी हिरस वर जासों हो जगमान॥
प्रीति रीति दुख मूल है मैं कीन्हों निरधार।
प्रीति भली भगवान की याते हो भव पार॥

भलो न जगमें चाम कोउ चाम दुःखकोमूल ।
पर गुरु पितुके चाम ते मिटै दुःख को मूल ॥
बुरो मांगिबो जगत ते यातेँ हो अपमान ।
छमा मांगिबो ईश ते भले एक करिध्यान ॥

विनय—दोहा ॥

प्रातहि उठिके नित्त नित करिये प्रभु को ध्यान ।
याते जगमें होइ सुख अरु उपजे सत ज्ञान ॥
काहू ते कडुवो वचन कहो न कबहूं जान ।
तुरत मनुज के हृदय में छेदत है जिमि बान ॥
पढ़िबे में कबहूं नहीं नागा करिये चूक ।
कुपढ़ लोग मांगत फिरहिं सहहिं निरादर भूक ॥
कबहुं न चोरी कीजिये यदपि मिलै बहु बित्त ।
नर फंसि ताके फन्द में पावहि लाज अमित्त ॥
मीठी बोली बोलिये करिके सबसों प्रीति ।
करे प्रेम तासों सकल लखि शुक सारिक रीति ॥
यदपि होत पित मात को सब सुत पै समनेह ।
लखि सुपुत ठण्ढक लहै जरै कुसुत लखि देह ॥

जो जन ईर्षा धारि मन जरत देखि पर हित्त ।
कैसे ऐसे पुरुष के शीतलता रह चित्त ॥
जानि सर्ब गति ईश की करै न कबहूं पाप ।
सबहि चराचर जगत को देखत है वह आप ॥
सुनि के दुर्ज्जन के बचन हो रहिये चुप चाप ।
करै जो समता तासु की नीच कहावे आप ॥
झूठ कबहुं नहिं बोलिये झूठ पाप कर मूल ।
झूठे को कोउ जगत में करै प्रीति नहिं भूल ॥

प्रश्नोत्तर—दोहा ॥

सुखी जगत में कौन है कहो मोहिं समुझाहि ।
होय लीन भगवान में सुखी वही जगमाहि ॥
दुखी कहत हैं कौन सों ईश सृष्टि के बीच ।
देखि परोदय जो जरै दुखी कहत वह नीच ॥
को जगमें धनवान है जाको मन न डोलाय ।
जो राखे सन्तोष मन वह धनिकनि में राय ॥
कहत दरिद्री कौन सो कहो मोहिं करि नेह ।
धन तृष्णा जाके अधिक जानु दरिद्री तेह ॥

पुण्यवान जन होंहिं जे तिनकी कह पहिचान।
ईश्वर डर जाके हृदय पुण्यवान सो जान॥
पापी जन जो जगत में सो किमि जानो जाय।
जो अपने प्रभु सों विमुख पापी वही कहाय॥
बुद्धिमान नर के अवै लक्षण कहो बखान।
जो जग निन्दा सों डरै बुद्धिमान सो जान॥
सज्जन जन जग कौनसे कहु निश्चय करि मोहि।
राखि दया सब भल चहै सज्जन जानो सोहि॥
सबहि जगत जन एक से कैसे दुष्ट लखाय।
पर अकाज में जासु चित सो नर दुष्ट कहाय॥
बड़ो कवन या जगत में पूंछौं मैं यह बात।
ढकै दोष जो सबन के सो जन बड़ो कहात॥

नीति—दोहा॥

करो न रिपुता काहु सों सबके रह तुम मीत।
जाते मन प्रफुलित रहै होइ न रिपु की भीत॥
रहो जोन से देश में तहां के नृप की नीति।
देख चलो ता चाल को यह चतुरन की रीति॥

अस सुचाल के कारणे नर लह प्रभु चित बास।
ताते धन कीरति लहै पूरे पद की आस॥
जो नृप विद्या बल बिना कियो चहै पर बन्ध।
सो पूरी आपति चहै जिमि कुघाट चल अन्ध॥
पहिले लखि के दोष गुण फेर अरम्भै काज।
जाते मनको हो न दुख लहौ न जग में लाज॥
ऐसे नरसों बच रहो करै न कबहूं घात।
बार बार सौगन्ध खा कहै दीन ह्वै बात॥
सुनिकै सबकी बात को प्रथमहिं ढूढ़ो हेत।
फिरि उत्तर मुख ते कहो यहि विधि राखौचेत॥
पर निन्दा करि जो तुम्हैं देत बड़ाई पूर।
मति भूलो यापै कहूं तुम्हैं कहैगो कूर॥
जे आपुस में बैर करि मिलैं और के साथ।
वे भोगत हैं बहुत दुख परि बैरी के हाथ॥
पालो परजा पाय पद जाते यश जग होय।
पावो सुख परलोक में यह कहि चतुर नरोय॥

विचार कर लाभ को चित्त चलाना ॥

चौपाई—नारायण ॥

गोदावरी नदी के तीरा ।
सेमर तरु पक्षिन की भीरा ॥
जहां तहां ते आवहिं राती ।
बसैं सबहि पक्षिन की जाती ॥
एक काल अस्ता चल चन्दा ।
गयो भयो कानन आनन्दा ॥
अरुण उये आनन्दित गाता ।
लघु पतनक जाग्यो परभाता ॥
सबते पहिले आपुहि जाग्यौ ।
चहूं दिशा सो देखन लाग्यौ ॥
आवत देख्यो फंसरी हाथा ।
यम सों अवर न दूजो साथा ॥
मन अति शोच करत है कागा ।
मेरो आज हीन है भागा ॥
पहिली डीठि आजु मैं व्यांधू ।
देख्यों ताहिन देख्यों साधू ॥

चिन्ताकरी कवन धौं आजू ।
मुख दर्शन ते होइ अकाजू ॥
यह कहि काग उड्यो अकुलाई ।
कहा करै यहु देखहुं जाई ॥

दोहा ॥

पण्डित सुख सों करत हैं दान धर्म को भोग ।
मूरख दिन दिन लहत हैं सहज रोग में सोग ॥

चैापाई ॥

विषई जनते बिषय अरूझैं ।
दिन दिन उठि नितहूं मन बूझैं ॥
व्याधि मरन के शोक हैं जोन ।
हम को आज होहि धौं कैान ॥
पीछे काग चल्यो अकुलाई ।
मनहिं बांधि ढाड़स अधिकाई ॥
व्याध जाइ बन फांसी लाई ।
ता भीतर कनकी बिथराई ॥
ताही समै कबूतर राजा ।
निज कुटुम्ब की गहे समाजा ॥

ऊंचे उड़े जात आकाशा ।
देखत कनकी उपजी आशा ॥
बनकन देखि कबूतर धाए ।
चित्रग्रीव राजा समुझाए ॥
कहहु कहां ते चावर आए ।
निर्जन किन कूटे किन खाए ॥
निपुन निरूप करहु तुम सोई ।
जो कीन्हें सब कर भल होई ॥
तन्दुल कण लोभे तुम जामें ।
मैं तौ नीक न देखहुं तामें ॥
यह तौ युक्ति होहि गी ऐसी ।
करी व्याघ्र ब्राह्मण सों जैसी ॥

॥ दोहा ॥

सुवरण कङ्कण लोभते पथिक फंस्यो धसि पङ्क ।
निर्बल बूढ़े बाघ ज्यों गहि खायो निरशङ्क ॥

चौपाई ॥

यह सुनि बोले सबहि कपोता ।
यह दोहा अन मिल सों होता ॥

राज कपोत कथा यह कही।
सुनिये अर्थ सत्य होतही ॥
एक काल हों दक्षिण गयऊं।
देखत बड़ो तमासा भयऊं ॥
बूढ़ो व्याघ्र एक सर तीरा।
धर्मिष्ठी लीन्हे कुश नीरा ॥
सुवर्ण कङ्कण लीन्हे रहै।
कङ्कण लेन सबन सों कहै ॥
द्विज दरिद्रि कोऊ चलि आयो।
व्याघ्र आपनो बचन सुनायो ॥
हे पन्थी यहु कङ्कण लेहू।
यह सुवर्ण कङ्कण फल देहू ॥
यह सुनि बोल पथिक भो ठाढ़ो।
कङ्कण देखि लोभमन बाढ़ो ॥
कैसे भाग होइ अनकूला।
सुवर्ण सुख समूह को मूला ॥
यद्यपि है कङ्कण को पैबो।
अनरथहै घातक ढिग जैबो ॥

दोहा ॥

लाभहु होइ कुठौर ते तऊ भली नहिं बात ।
काल कूट संसर्ग ते अमृत बिष ह्वै जात ॥

चौपाई ॥

उद्यम कवन भांति सों करऊं ।
जहां तहां संशय सब मरऊं ॥
जौलौं नर संशय नहिं चढ़ै ।
कवन भांति सों तब लै बढ़ै ॥
संशय चढ़ि जोई फिरि जीवै ।
सो कल्याण अमृत फल पीवै ॥
ताते हौं प्रकाश फल देखो ।
कहा तुमारो कङ्कण पेखो ॥
हाथ पसारि बाघ दरशायो ।
कङ्कण देखि पथिक मन भायो ॥
पथिक कहै तोसों परतीती ।
करत होत प्राणन भय भीती ॥
बोलो बाघ बावरे अरे ।
अबहूं लौं तेरे डर भरे ॥

बूढ़ो भयों गलित नख दन्ता।
दया शील दाता मति बन्ता॥
करै न तू मेरो विश्वाशा।
मैं तो तेरी पुरवहुं आशा॥

दोहा॥

यज्ञ दान तप ध्यान यो सत्यक्षमा व्रत होइ।
अरु अलोभ गनु धर्म ये आठ भांति सों होइ॥

चौपाई॥

होत दम्भ ते पहिले चारी।
पिछिले नीके देखु बिचारी॥
यहं लग देखु न मोको लोभू।
सुवरण कङ्कण देखत क्षोभू॥
मनुजहि बाघु मारि के खाई।
यह अपबाद मेटि नहिं जाई॥

दोहा॥

धर्म्म कर्म कुटनी कहै कोऊ करहि न कान।
गो बध कोन्हें हूं कहै विप्र बचन पर मान॥

चौपाई ॥

धर्म शास्त्र मैं जानहुं नीके ।
मेरे मुख सब लागत फीके ॥

दोहा ॥

प्राण आपने देखि तन और नहीं मनि बाध ।
अपनेही अनुमानते दया करत हैं साध ॥
सुख दुख प्रिय अप्रिय निरखि अनलीवो आदान।
साधन किये प्रमाण ये अपनेही अनुमान ॥

चौपाई ॥

मैं देखहुं तुम दुर्बल अङ्गा ।
ताते किया दान परसङ्गा ॥
यहै बात कुन्ती सुन बूझी ।
कह्यो कृष्ण तबहीं वह बूझी ॥

सोरठा ॥

दीजे दीनहि दान कहा दिये धन धनिनको ।
रोगी औषधि प्राण वृथा मूरि निररोग को ॥

दोहा ॥

दीबे होइ सो दीजिये बिन कीन्हें उपकार ।
दियो जाइगो कवंन सों द्विज सेवा को भार ॥
देश काल कुल पात्र लखि दीन्हें पावत पार ।
बिना दिये धन धनिनको वृथा जगत अवतार ॥

चैापाई ॥

सर नहाइ यह कङ्कण लेऊ ।
द्विज दरिद्र कहं पानी देऊ ॥
मज्जन हेत सरोवर धस्यो ।
तैालों महा पङ्क में फस्यो ॥
भागि सकै नहिं अवर उपाऊ ।
तहूं न बाघ कहै सति भाऊ ॥
काढ़हुं आइ तोहि द्विज दीना ।
तूतो भयो जलहि कों मीना ॥
सङ्क सङ्क घातक ढिग आयो ।
मूड़ मारि बिप्रहि समुझायो ॥
कहहु पथिक तू का यह कीन्हा ।
घातक की बातन मनु दीन्हा ॥

दोहा ॥

विद्या अरचनहूं किये दुरजन होत न सूध ।
प्रकृति स्वभाव मिटै नहीं ज्यों मीठे गोदूध ॥
इन्द्री जाके वश नहीं रहें नयन अरु कान ।
धर्म क्रिया बिन काज तो ज्यों गजके असनान ॥
अभरन बारह करत ज्यों अरु सोरह शृङ्गार ।
क्रिया बिना ते होत हैं ते इन्द्रिय को भार ॥
गुणमति गुण शोभा वहो परखि हरषि ढिगजाउ ।
जोरावर जित सब गुणनि मूढ़हि चढ़त सुभाउ ॥

चौपाई ॥

यह कोन्ही चिन्ता बहुतेरी ।
जब लगि मीचु न आई नेरी ॥
नीकी नहीं लोभ की बाता ।
पथिक मुयो पाछे पछिताता ॥
याते मैं कङ्कण की कथा ।
तुम सों कही भई है यथा ॥

संसार अनित्य है ॥

सवैया,—तुलसीदास ॥

बैठि समुद्र की ओट के कोट में कञ्चन के घर जाइ भुलाना। बीस भुजा बलवन्त हुतो तब इन्द्र गयन्दहु से हम ताना॥ लाखु करोरि सुता सुत बन्धव सो गृह रावण जात न जाना। धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो वुताना॥ बलि विक्रम बेणु दधीच गये औ गये पारथ जिन भारत ठाना। बालि गये बलरूप गये जिनको कंखरी दशकंठ दबाना। गये दुर्योधन जङ्ग जुरे जिन चौंसठि कोश में छत्र विताना। धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो वुताना॥

धरा को प्रमाण ॥

केते भये यादव सगर सुत केते भये जातहू न जाने ज्यों तरैयां परभात की। बलि बेणु अम्बरीष मानधाता प्रहलाद कहांलों गनावों कथा रावण ययाति की। एऊ न बचन पाए काल कौतुकी के हाथ भांति भांति सेना रची घने दुख घातकी॥

चारि २ दिना को चाउ चाहैं सो करै मनमें अन्त लूटि जैहै जैसे पूतरी बरात की ॥

दोहा—शिवप्रसाद ॥

इत गुलाम इत इलतमिस इतहि महम्मद शाह ।
इतहि सिकन्दर सारिखे बहुतेरे नर नाह ॥
जे न समाए बाहु बल अटक कटक के बीच ।
तीनि हाथ धरती तरे मीचु किए अवनीच ॥
जे आये नूतन रचे घर गढ़ नगर समाज ।
पूरे काहू ने नहीं किये जगत के काज ॥
जग पर कबहुं न कीजिये भूलि मनहिं विश्वास ।
या ने बहुतन को किया पालन और विनाश ।
देह छोड़ि जब जात है जीव पवित्र अभेद ।
कह आसन कह भूमि पर मरन माहिं कछु भेद ।

वंशीधर ॥

संग किसी के मति चलो यह जग माया रूप ।
ताते तुम वाको भजहु जो जगदीश अनूप ॥
चलना है रहना नहीं चलना विश्वा बीस ।
ऐसे सहज सोहाग पर कौन गुंधवे शीस ॥

सवैया—श्रीलाल ॥

आतशबाज़ीगईछणमें छुटिचेततनाहिंअजोअँखिफूटे ।
मायाकेबाजनबाजि गयेपरभातहीं भात खवासबबूटे ॥

देव ॥

देव देखैयन दाग़ बने रहे बाग़बने ते बरोठेही लूटे ।
काम परो दुलही अरु दूलह चाकर यार दुवार ते छूटे ॥

घनाक्षरी ॥

कामों करीं मोह मोहि मोहीं की परी है देव मोहन से मोही महा माया में बिलाय गये । मीन से मुनीश महा मनु से मनुज मानधाता सम मानी महा मदसों सिराय गये ॥ वामन से रावन से रामजू से खेलि खेलि खलन की खोपरी खिलौना सी खिलाय गये । काटे महा काल व्याल बली बलिभद्र ऐसे बालि ऐसे बलि से बल्ला से विलाय गये ॥

सवैया ॥

हायदई या कालके ख्यालमें फूलसे फूलिसबे कुम्हिलाने ।
याजगबीचबचो नहिंमीचसेजेउपजे तेमहीमेंबिलाने ॥

देव अदेव बली बलहीन चलेगयेमोहकी हौसहिलाने ।
रूप कुरूप गुणी निगुणी जे जहांउपजे तेतहांहींसमाने ॥

———•

व्यवहारिक उपदेश ॥

कुण्डलिका——गिरिधर ॥

प्राण पुत्र दोऊ बड़े युग चारहु परमान ।
सो नरेश दशरथ तजे वचन न दीन्हे जान ॥
वचन न दीन्हे जान बड़ेन की यही बड़ाई ।
बानि कही सो होइ और सर्व्वस किन जाई ॥
कहि गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना ।
वचन कहे नहिं तजे तजे सुत अरु निज प्राणा ॥
नारी अतिबल के भये कुलकर होत विनाश ।
कौरव पांडव वंश को किया द्रौपदी नाश ॥
किया द्रौपदी नाश केकई दशरथ मारे ।
रामचन्द्र से पुत्र त्यज वनवास सिधारे ॥
कहि गिरधर कविराय सदा नर रहइ दुखारी ।
सो घर सत्या नाश जहां है अति बल नारी ॥
यारा शायर दश भले कायर भले न पचास ।

शायर रण सम्मुख लरैं कायर प्राण कि आश ॥
कायर प्राण कि आश भागि रणते वे आवैं ।
आपु हंसावहिं लोग नृपति को नाम धरावैं ॥
कहि गिरिधर कविराय बात चारहु युग जाहर ।
शायर भले हैं पांच संग सो भले न कायर ॥
तोरहु नदी न तीर तरु जो बरषा सरसाय ।
बारिबाढ़ि दिनचारिकी अपयशजन्म न जाय ॥
अपयश जन्म न जाइ जाइ पाहन मिटि रेखा ।
विभव बड़ाई समय सदा कहुं रहत न देखा ॥
कहि गिरधर कविराय एक नेकी जनि छोड़हु ।
समय घटत पुनि बढ़त तीरतरु नदी न तोरहु ॥
बड़े पात को देखिके चढ़ो कमण्डल धाय ।
तरुवर होंहित भरु सहहिं रंड़ फाटो अरराय ॥
रड़ फाटो अरराय फूल अन्तहि कहुं फूला ।
बतियां गई सुखाय और मारग में भूला ॥
कहि गिरिधर कविराय सुनहु अनओही अड्डे ।
वे देशहि जनि जाउ जहां बातन के बड्डे ॥
जाको धन धरतो हरी ताहि न लीजे सङ्ग ।

जो संगै राखे बनै तौ करि डारु अपङ्ग ॥
तौ करि डारु अपङ्ग फेरि फरकै सो न कीजे ।
कपट फन्द बतलाइ तासु को मन हरि लीजे ॥
कहि गिरिधर कविराय खटक जैहै नहिं ताकी ।
सो कछु करै उपाय हरी धन धरती जाकी ॥
हीरा अपनी खानिको मनहीं मन पछिताय ।
गुण कीमति जानी नहीं कहां बिकान्यो आय ॥
कहां बिकान्यो आइ छेदि करिहाँव सो बांध्यो ।
बिन हरदी बिन लोनमांस जस फूहर रांध्यो ॥
कहि गिरिधर कविराय धरौं कैसे मन धीरा ।
गुण कीमति घटिगई यही कहि रोयो हीरा ॥
हंसा यहं रहिये नहीं सरवर गये सुखाय ।
जो रहिये तो शीस पर बगुला देहैं पाय ॥
बगुला देहैं पांय कीच कारे ह्वै जैहो ।
लोक हंसाई होइ कहा कछु इज्जति पैहो ॥
कहिगिरिधर कविराय मोहिं यक एही शंसा ।
याहू ते कछु घाटि श्रौरहू होइँ हंसा ॥
नयना जबपरवश परैं उत्तम गुण सब जांय ।

वे फिरि २ जोरी करैं ए फिरि फिरि लपिटांय ॥
ए फिरि २ लपिटांय नेच बहुरैं भरि आवैं।
खान पान सुख त्याग रात दिनहीं दुख पावें ॥
कहि गिरिधर कविराय सुनहु तुम श्रवणनि नयना।
लोग जुदे इकलंक परैं जब परवश नैना ॥
धोखे दाड़िम के सुवा गयो नारियर खान।
खन खाई पाई सज़ा तब लाग्यो पछितान ॥
तब लाग्यो पछितान बुद्धि अपनी को रोवै।
निर्गुणियन के साथ बैठि अपनो गुन खोवै ॥
कहि गिरिधर कविराय घरै जेये नहिं रोखे।
चोंच खटके टूटि सुवा दाड़िम के धोखे ॥
साईं पुर पाला परो आसमान ते आय।
पंगु अन्ध को छोड़िके पुरजन चले पराय ॥
पुरजन चले पराय अन्ध एक मतो विचारो।
धरि पंगा को पीठि डोठि वाकी पगु धारो ॥
कहि गिरिधर कविराय मतेसों चलियो भाई।
बिना मते की राज्य गई रावण की साईं ॥
साईं समय न चूकिये खेलि शत्रु सों सार।

दाँव परे नहिं छोड़िये तुरत डारिये मार ॥
तुरत डारिये मारि नरद काची करि दीजे ।
काची होइतौ होइ जीति जगमें यश लीजे ॥
कहि गिरिधर कविराय बड़े बुधिवानन गाई ।
कोटिन करिय उपाय शत्रु को मारिय साई ॥
साईं घोड़न के अछत गदहन आयो राज ।
कौवा लेके हाथ में छोड़ि देत हैं बाज ॥
छोड़ि देत हैं बाज राज अब ऐसो आयो ।
सिंहन को करि कैद स्यार गजराज चढ़ायो ॥
कहि गिरिधर कविराय जहां ए बूझ बड़ाई ।
तहां न बसिये रैनि सांझहीं चलिये साईं ॥
साईं नदी समुद्र को मिली बड़प्पन जानि ।
जातिनाश भइमिलतही मानमहतकी हानि ॥
मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजे ।
जल खारी ह्वै गयो कहो अब कैसे पीजे ॥
कहि गिरिधरकविराय कच्छ मच्छन सकुचाईं ।
बड़ो फज़िहता चार भयो नदियन को साईं ॥

ऐश्वर्य में दीन मित्र पर प्रेम ॥

दोहा—नरोत्तम ॥

गणनायक को नाम लै गवन सुदामा कीन ।
कृष्ण मिलन की चाह मन चले दिवस द्वै तीन ॥
तीनि दिवस चलि विप्र के दूखि उठे जब पाय ।
एक ठौर सोए कहूं घास पयार बिछाय ॥
अन्तर्यामी आपु हरि देखि मित्र की पोर ।
सोवत लै ठाढ़ो कियो नदी गोमती तीर ॥
प्रात गोमती दरश ते अति प्रसन्न भो चित्त ।
विप्र तहां अस्नान करि कीन्हो नित्त निमित्त ॥
भाल तिलक घिसि दै लियो गही सुमरणी हाथ ।
दिव्य देखि द्वारावती भये अनाथ सनाथ ॥
द्वारपाल द्विज जानिके कीन्हो दण्ड प्रणाम ।
विप्र कृपा करि भाषिये सकल आपनो नाम ॥
नाम सुदामा कृष्ण हम पढ़े एकही साथ ।
कुलपांडे ब्रजराज सुनि सकल जानि हैं गाथ ॥
द्वारपाल तहँ चलि गयो जहां कृष्ण यदुराय ।
हाथ जोरि ठाढ़ो भयो बोलो शीस नवाय ॥

सवैया ॥

लोचनपूरि रहे जलसेप्रभु देखतही दुखदूरिते मेटो ।
शोचबढ़ो सुरनायकके कलपद्रुमके उरमाहिं खखेटो ।
कम्पि कुबेर हिये सरसे परशे जब पाद सुमेरु समेटो ।
रंकतेराजभयो तबही जबहीभरिअंक रमापति भेटो ॥

घनाक्षरी ॥

हूल हियरामे अरु कानन परीहै टेर भेटत सुदामैं श्याम चवत ना अघात हीं। कहै कवि नरोत्तम रिधि सिद्धिन में शोर भयो ठाढ़ी थरहरै अरु शोचै कम लातहीं॥ नागलोक नाक लोक लोक लोक ठाढ़े थर हरै शोचैं सूखे सूखे जात सब गात हीं। हालो परो थोकन में लालो परो लोकन में चालो परो चक्रन में चावर चबात हीं ॥

सवैया ॥

भौन भरे पकवान मिठाइन लोग कहैं निधिहै सुखमाके ।
सांझसकारेपिताअभिलाषतदाखन चाखत सिंधुरमाके॥

ब्राह्मणएककोऊ दुखियासेर पावक चावरलायोसमाके।
प्रीतिकीरीतिकहाकहियेत्यहिबैठेचबातहैंकन्तरमाके॥
दाहिनेवेदपढैं चतुरानन सामुहेध्यान महेश धरेहैं।
बायेंदुओकर जोरिसुरेश लयेसब देवन साथ खड़े हैं॥
एतहीं बीच अनेक लियेधन पांयन आजु कुवेर परेहैं।
देखिविभौ अपना सपना ब्रह्मनाथ पुरेवहुचौंकि परेहैं॥

दोहा॥

दीबो हतो सो दै चुके विप्रन जानी गाथ।
मनमें गुणी गोपालजू जोकछु दीन्हों हाथ॥
वहपुलकनि वह उठि मिलनि वह आदरकीबानि।
यह पठवनि यदुराय को अब न परी मोहि जानि॥
घर घर कर ओढ़त फिरे नेक मही के काज।
कहा भयो जो अब भयो हरिके राज समाज॥
बालापन के मित्र हे कहां देउ अब शापु।
जैसो हरि हमको दयो तैसे पैयो आपु॥
नव गुण धारी छगुणसों त्रिगुणा मध्ये जाय।
लाये चपला चौगुणी आठो गुणन गमाय॥

घनाक्षरी ॥

सुन्दर महल मणि माणिक जटित अति सुवरण सूरज प्रकाश मानो दै रह्यो । देखत सुदामा जू को नगर के लोग धाय भेटे हरषाइ जोई सोई पगु छुइ रह्यो ॥ ब्राह्मणी को भूषण विविधि विधि देखि कह्यो जेहों हों निकासो सो तमासो जग ह्वै रह्यो । ऐसी दया करी जब हरिके दरश पाइ द्वारिका ते सरिस सुदामा पुर ह्वै रह्यो ॥

दोहा ॥

कनक दण्ड करमें लिये द्वारपाल हैं द्वार ।
जाइ दिखायो सबन लै यहै जु गेह तुम्हार ॥
कह्यो सुदामा हंसति हो ह्वै करि परम प्रवीन ।
कुटी दिखावहु मोहिं वह जहां ब्राह्मणी दीन ॥
द्वारपाल सों तिन कही कहि पठवहु यहगाथ।
आके विप्र महा बली देखहु होहु सनाथ ॥
सुनत चली आनंद युत सब सखियन लें संग।
नूपुर किंकिणि दुंदुभी मानहु तुरंग अनंग ॥

कह्यो ब्राह्मणी आइके यहै कन्त निजु गेह ।
श्री यदुपति निहुंलोक में कीन्हो प्रगट सनेह ॥

राम चन्द्र और रावणादिक का युद्ध ॥

चामर छन्द—केशव ॥

कुम्भ करण रावणहिं प्रदक्षिण करी चल्यो ।
हाय हाय ह्वै रहेउ अकाश आसुहीहल्यो ॥
मध्य क्षुद्र घुंटिका किरीट संग शोभनो ।
लक्ष पक्ष मों कलिंद्रि इन्द्र को चक्योमनो ॥
उडैं दिशा २ कपीश कोटि २ श्वासही ।
चपै चपेट पेट बाहु जानु जंघ सोतही ॥
लए हैं ऐंचि ओर २ बीर बाहु बातहीं ।
भये ते अन्तरिक्ष २ लक्ष २ जातहीं ॥

भुजंगप्रयात—कुम्भकरण ॥

नहो ताडुका हो सुबाहो न मानो ।
नहो शंभुको दण्ड सांची बषानो ॥
नहो ताल मालीखरो जाहि मारो ।
नहो दूषनो सिंधु सूधो निहारो ॥

सुरी आसुरी सुन्दरी भोग करना।
महा काल को काल हौं कुम्भकरना॥
सुनौं राम सङ्ग्राम को तोहि बोलौं।
बढ्यो गर्व लङ्काहि आए सुखोलौं॥
उद्यो केशरी केशरी जोर छायो।
बलो बालि को पूत ले नील धायो॥
हनूमन्त सुग्रीव सोहैं सभागे।
डशैं डांश से अङ्ग मातङ्ग लागे॥
दशग्रीव को वन्धु सुग्रीव पायो।
चल्यो अङ्क में ले भले अङ्क लायो॥
हनूमन्त लत्ता हन्यो देह भूल्यो।
छुट्यो कर्ण नाशाहि ले इन्द्र फूल्यो॥
संभारो घरी एक में हूं मरू कय।
फिस्यो रामही सामहें सो गदा लय॥
हनूमन्त जू पूंछ सों लाइ लीन्हों।
नजानो कबे सिन्धु में डारि दीन्हों॥
जहां काल के केतु सों लात लीनो।
कियो राम जू हस्त पादादि हीनो॥

चल्यो लोटते पांय वक्रै कुचाली ।
उठ्यो मुराडले बान ज्यों मुराडमाली ॥
तहां सुरन के दुन्दुभी दीह बाजे ।
करी पुष्प की वृष्टि जे देव गाजे ॥
दशग्रीव शोकग्रस्यो लोक हारी ।
भयो लङ्कहीं मध्य आ:तङ्क भारी ॥

दोहा ॥

तबही गयो निकुम्भिला होम हेत इंद्र जीत ।
कह्यो तबहि रघुनाथ सों मता विभीषण मीत ॥

चञ्चरीक ॥

जोरि अङ्गुलि को विभीषण राम सों बिनती करी ।
इन्द्र जीत निकुम्भि लागो होम हेतहि शुभ घरी ॥
सिद्धि होम न होइ जबलगि ईश तबलगि मारिये ।
सिद्धि होम प्रसिद्धि है यह सर्वथा हम हारिये ॥

दोहा ॥

सोई वाहि हते किन बानर रिच्छ जो कोइ ।
बारह वर्ष छुधा तृषा निद्रा जीते जोइ ॥

चञ्चरीक ॥

राम चन्द्र बिदा कियो तब बेगि लक्ष्मण बीर को ।
संग विभीषण जामवन्तहि श्रोर अङ्गद धीर को ॥
नील श्रो नल केशरी हनुमन्त अन्तक ज्यों चले ।
बेगि जाय निकुम्भिला थल यज्ञ के सिगरे दले ॥
जामवन्तहि मारि द्वै शर तीनि अङ्गद छेदियेँ ।
चारि मारि विभीषणहिं हनुमन्त पञ्च सुबेधिये ॥
एक २ अनेक बानर जाय लक्ष्मण सों भिरयो ।
अन्ध अन्धक युद्ध ज्यों भवमों जुरयो भवही हरयो ॥

गीतिका ॥

इन्द्र जीत अजीत लक्ष्मण अस्त्र शस्त्र न संहरै ।
शर एक २ अनेक मारत बुन्द मन्दर ज्यों परै ॥
तब कोपि राघव शत्रु को शिर बाण तत्क्षन उद्धरयो ।
दशकन्ध सन्ध्यहि को करै शिर जाय अञ्जुलि मेंापरयो ॥
रणमारि लक्ष्मण मेघनादहि स्वच्छ शङ्ख बजाइयो ।
कहि साधु २ समेत इन्द्रहि देवता सब आइयो ॥
कछु मांगिए वर बीर सत्वर भक्ति श्री रघुनाथ की ।
पहिराय माल बिशाल अर्चहि के गए सब साथ की ॥

कलहंस ॥

हति इन्द्रजीत कहं लक्ष्मण आए।
हंसि रामचन्द्र बहुधा उर लाए ॥
पुनि मित्र पुत्र शुभ सोदर मेरे।
कहि कौन २ सुमिरौं गुण तेरे ॥

दोहा ॥

नींद भूख अरु प्यास को जो न साधते वीर।
सीतहि क्यों हम पावते सुनु लक्ष्मण रणधीर ॥

दोधक ॥

देख्यो शिर अङ्गुलि मों जबहीं।
हा हा करि भूरि पख्यो तबहीं ॥
आए सुत मन्त्री मित्र सबै।
मन्दोदरि सो त्रिय आइ तबै ॥
कोलाहल मन्दिर मांझ भयो।
मानो प्रभु को उड़ि प्राण गयो ॥
रोवै दश कण्ठ बिलाप करै।
कोऊ न तहूं तहं धीर धरै ॥

दण्डक—रावण वाक्य ॥

आजु आदित्य जल पवन पावक प्रबल चन्द आनन्द मय ताप जगको हरी। गान किन्नर करहु नृत्य गन्धर्व कुल यक्ष बिधि लक्ष उर दक्ष कन्दर्प धरौ॥ ब्रह्म रुद्रादि सब देव त्रैलोक्य के राजु की आजु अभिषेक इन्द्रहि करौ। आजु सियराम दै लङ्क कुल दूषनै यज्ञ कहं जाय सर्बज्ञ विप्रन वरौ॥

तोमर—मन्दोदरी वाक्य ॥

प्रभु शोचत जो जिय धीर धरौ।
सब शत्रु बधौ स्व विचार करौ॥
कुलमें अब जीवत जो बचि है।
सब शोक समुद्रहि सो तरि है॥

अनुकूल ॥

सोदर जूझो सुत हित कारी।
को गहि है लङ्कहि अधिकारी॥
सीतहि दै के रिपुहि संहारौ।
मोह तजो विक्रम बलधारौ॥

तारक—रावण वाक्य ॥

तुम अब सीतहि देहु न देहूं।
विन सुत बन्धु धरौं नहिं देहूं॥
यह तनु तजि लाजहि गहि रहिहौं।
वन बसि जाय सबै दुख सहिहौं॥

भुजङ्ग प्रयात—मकराक्ष वाक्य ॥

कहा कुम्भकरने कहा इन्द्र जीतो।
करै सोइ वो किङ्करै युद्ध जीतो॥
सु जौलों जियौं हौं सदा दास तेरो।
सिया को सकै लै सुनो मन्त्र मेरो॥
महाराज लङ्का सदा राज कीजै।
करौं युद्ध मोको बिदा बेगि कीजै॥
हतौं बन्धु सों राम सुग्रीव मारौं।
अयोध्याहि लै राजधानी सिधारौं॥

बसन्त ललित ॥

कोदण्ड हाथ रघुनाथ संम्हारि लीजै।
भागे सबै समर युत्थप दृष्टि दीजै॥

बेटा बलीष्ठ खरको मकराक्ष आयो।
संहार काल जनु काल कराल धायो॥
सुग्रीव अङ्गद बली हनुमन्त रोको।
रोको रहो न रघुनाथ जबै बिलोको॥
मार्यो बिभीषण गदा उर जोर ठेली।
काली समान भुज लक्ष्मण कण्ठ मेली॥
गाढ़े गहे प्रवल अङ्गन अङ्ग भारे।
काटे कटै न बहु भांतिन काटि हारे॥
ब्रह्मादियो जो वर अस्त्रन शस्त्र लागै।
लैही चलो समर सिंहहि जोर गाजै॥
गाढ़ान्धकार रबि भूतल लीलि लीन्हो।
ग्रस्तास्त राहु युत मानहु चन्द कीन्हो॥
हाहादि शब्द सब लोक जहो पुकारे।
गाढ़े अशेष अङ्ग राक्षस के बिदारे॥
श्री रामचन्द्र पद लागत चित्त हर्षे।
टेबांधि देव मिलि सिद्धि न पुष्प वर्षे॥
जूझो जबै समर दुन्दुभि दीह बाजो।
इन्द्रादि देव मिलि किन्नर यक्ष राजो॥

दोहा ॥

जूझतही मकराच्छ के रावन अति दुख पाय।
सत्वर श्री रघुनाथ पहं दियो बसीठि पठाय ॥

चोटक——श्री रामचन्द्र वाक्य ॥

दूतहि देखतही रघुनायक ।
ता कहं बोलि उठे सुखदायक ॥
रावण के कुशली तुम सोदर ।
कारय कौन करै अपने घर ॥

विजै——दूत वाक्य ॥

पूजि उठ्यो जबहीं शिवको तबहीं विधि शुक्र वृहस्पति आये। कै बिनती तिन कश्यप के मिष देव अदेव सबै बकसाये ॥ होमकी रीति नई सिखई कछु मन्त्र दिये श्रुति लागि सिखाये। हों इतको पठयो उनको उत लै प्रभु मन्दिर मांझ सिधाये ॥

सन्देश ॥

शूपनखाहि बिरूप करी तुम ताते दियो तुमको दुख भारो। बारिधि बन्धन कीन्हे हुतो तुम मो सुत बन्धन कीन्हो तुम्हारो ॥ होइ जो होनी सो होई रहै न

मिटै जिय कोटि विचार विचारो। दै भृगु नन्दन को परसा रघुनन्दन अवध पुरी पगु धारो ॥

दोहा—श्री राम वाक्य ॥

प्रति उत्तर दूतहि दियो यह कहि श्री रघुनाथ।
कहियो रावण होइ जहं मन्दोदरि के साथ ॥

संयुक्ता—रावण वाक्य ॥

कहु धों बिलम्ब कहा भयो।
रघुनाथ पै जब तू गयो ॥
किमि भांति तू अवलोकियो।
कहु तोहि उत्तर का दियो ॥

दण्डक ॥

भूतल के इन्द्रभूमि बैठेहुते रामचन्द्र मानिक कनक मृग छालहि बिछाए जू। कुम्भहरन कुम्भकरन नास हर गोदशीश चरन अकम्प अदय अरि उर लाए जू ॥ देवान्तकनारान्तक अन्तक ते मुसक्यात विभीषन बैनतन कान रुखपाए जू। मेघनाद मकराक्ष महोदर प्रानहर बान सो विलोकत परम सुख पाए जू ॥

सवैया—उत्तर ॥

भूमिदई भुवदेवन को भृगु नन्दन भूपनसों वरलैके ।
वामनस्वर्गदयोमघवाहि बलीबलिबांधिपतालपठैके ॥
सन्धिकिबातन कोप्रतिउतरुआपुनहींकहिए हितुकैके ।
दीन्हीहैलङ्कविभीषण कोहमदेई कहातुमको वहदैके ॥

मलिनी—मन्दोदरीवाक्य ॥

तब सब कहि हास्यो राम को दूत आयो ।
अब समुझि परी है पुत्र भैया जुझायो ॥
दशमुख सुख जीजे राम सों हों लरो ज्यों ।
हरि हरहिय हारे देवि दुर्गा लरी ज्यों ॥

रावण वाक्य ॥

छल करि पठयो हों पावतो जो कुठारै ।
रघुपति वपुरा को धावतो सिन्धु पारै ॥
हर सुरपति भर्ता बिष्णु माया विलासी ।
सुनहुं सुमुखि ताकों ल्यावतो लक्ष दासी ॥

चामर ॥

प्रौढ़ रूढ़ केश प्रौढ़ गेह गूढ़ में गयो ।
शुक्रमन्त्रतन्त्रशोधिहोम कोजहींभयो ॥

बालिपूत वायु पूत जामवन्त आइयो ।
लङ्क में निशङ्क अङ्क लङ्कनाथ पाइयो ॥
मत्तदन्ति पङ्क्ति वाजिराजि छांड़िकेदये ।
भांति भांति पक्षिराज भाजि २ केगये ॥
आसने बिछावने बितानतानतारियो ।
यत्र तत्र चौर छत्र चारु चूरि डारियो ॥

भुजङ्ग प्रयात ॥

भजी देखि के शङ्कि लङ्केश बाला ।
दुरी दौरि मन्दोदरी चित्र शाला ॥
तहां दौरि गो बालि को पूत फूलो ।
सबे चित्र की पुत्रिका देखि भूलो ॥
गहे दौरि जाको तजे ताकि ताको ।
तजे जा दिशा को भजे वाम ताको ॥
भली के निहारी सबे चित्र सारी ।
गहे सुन्दरी क्यों दरी को बिहारी ॥
तजे दृष्टि के चित्र को सृष्टि धन्या ।
हंसी एक ताको तहीं देव कन्या ॥

जहों हांसहीं देव कन्या दखाई।
तहीं शङ्कि के लङ्क रानी बताई॥
सुञानो गहे केश लङ्किय रानी।
तम श्री मनो शूर शोभा निशानी॥
गहे वांह खैंचे चहूं ओर ताको।
मनो हंस लीन्हे मृणाली लता को॥
छुटी कण्ठ माला उरो हार टूटे।
खमे फूल फूले लसे केश छूटे॥
फटी कञ्चुकी किङ्किनी चारु छूटी।
पुरी काम की सी मनो रुद्रलूटी॥
विना कञ्चुकी स्वच्छ वक्षोज राजैं।
किधों सांचहूं श्री फले शोभ साजैं॥
किधों स्वर्ण के कुम्भ लावण्य पूरे।
वशी करण के चूर्ण सम्पूर्ण पूरे॥
मनो इष्ट देवै सदा इष्टही के।
किधों गुच्छ द्वै काम सञ्जीवनी के॥
मनो चित्त चैागान को मूल सोहै।
हिये हेम की हाँल गोलानि मोहै॥

सुनी लङ्करानी न की दीन वानी ।
तहाँ छाड़ि दीन्ही महा मौन मानी ॥
उठो लै गदा को सदा लङ्क वासी ।
गए भाजि कै सर्व शाखा विलासी ॥

दोहा——मन्दोदरी वाक्य ॥

सीतहि दीन्हों दुख वृथा सांची देखहु आजु ।
करै जो जैसी त्यों लहै कहा रङ्क कह राजु ॥

विजया——रावण वाक्य ॥

कोवपुरा जो मिला है विभीषण है कुल दूषन जीवै गो कौलों । कुम्भकरन्न मरो मघवारिपु तौव कहान डरौं यम सोलों ॥ श्री रघुनाथ के गातहि सुन्दरि जानैन तैं कुशलात है तोलों । शाल सबै दिकपाल न के कर रावण के कर वाल है जोलों ॥

चामर ॥

रावणै चले चलेत धाम धाम सों सबै ।
साजि २ साज शूर गाजि २ के तबै ॥
दीह दुन्दुभी अपार भांति भांति बाजहीं ।
युद्ध भूमि मध्य क्रुद्ध मत्तदन्ति राजहीं ॥

चञ्चरी ॥

इन्द्र श्रीरघुनाथ को रथहीन भूतल देखि के ।
वेगि सारथिसों कह्योरथ जाहु लै सु विशेषिके ॥
तून अक्षय बान स्वच्छ अभेद लै तनत्राणको ।
आइयो रन भूमि में करि अप्रमेय प्रमान को ॥
कोटि भांति न पौन ते मनते महालघुता लसै ।
बैठि के ध्वज अग्रश्री हनुमन्तअन्तक ज्यों हंसै ॥
रामचन्द्र प्रदक्षिणा करिदक्ष ल्यैजबहीं चढ़े ।
पुष्प वृष्टि बजाइ दुन्दुभि देवता बहुधा बढ़े ॥
राम को रथमध्य देखत कोप रावण केबढ्यो ।
बीस बाहुन की शरावलि ब्योम भूतलसोंमढ्यो ॥
शैल ज्यैंसिक्ता गए सब दृष्टि के बलसे धरे ।
रिक्ष बानर छेदि तत्क्षण लक्ष लक्ष तनाकरे ॥

सुन्दरी ॥

बानन साथ उड़े सब बानर ।
जाइ परे मलया चल के घर ॥
सूरय मण्डल में एक रोवत ।
एक अकाश नदी मुख धोवत ॥

एक गए यम लोक सहैं दुख।
एक कहैं पुत्र भूतन सों सुख॥
एकति सागर माहं गए मरि।
एक गए बड़वा नल में जरि॥

मोदक॥

श्री लक्ष्मण कोप करो जबहीं।
मेले शर पावक के तबहीं॥
जारो शर पञ्जर चार करो।
नैऋत्यन को अति चित्त डरो॥
दौरे हनुमन्त बली बलसों।
लै अङ्गद सङ्ग सबै दलसों॥
मानो गिरिराज तजे डर को।
घेरे चहुं ओर पुरन्दर को॥

हीरा॥

अङ्गद रण अङ्गद सब अङ्गन मुरझाइ कै।
रिक्ष पतिहि अक्ष रिपुहि लक्ष गति रिझाइकै॥
वानर गन बानर सम केशव जबही मुरे।
रावन दुख दावन जग पावन समुहे जुरे॥

ब्रह्मरूपका ॥

इन्द्रजीत जीत आनि रोंकिये सुबान तानि।
छाड़ि दीन बीर बान कान के प्रमाण आनि॥
शिव प्रताप काटि चाप अङ्ग चर्म बर्म छेदि।
जात भो रसातले अशेष कण्ठ माल भेदि॥

दण्डक ॥

सूरय मुशल नील पट्टिस परिघ नल जामवन्त असि हनू तोमर प्रहारे हैं। फरसा सुखेन कुन्त केशरी गवाक्ष शूल बिभिषण गदा गज भिण्ड पाल तारे हैं॥ मुगरा दुबिद तारु कटरा कुमुद नेज अङ्गद शिला गवाक्ष विटप बिदारे हैं। अङ्कुश सरभ शूल दधिमुख शेष शक्ति बाण तीनि रामचन्द्र रावण उर मारे हैं॥

दोहा ॥

द्वै भुज श्री रघुनाथ सों बिरचे युद्ध बिलास।
बांह अठारह युद्ध पति मारै केशव दास॥

गङ्गोदक ॥

युद्ध जोई जहां युद्ध जैसो करै ताहि ताही दशा रोंकि राखें तहीं। आपने शस्त्र ले शस्त्र

काटे भले ताहि केहू कहूं घाव लागे नहीं॥ दौरि सौमित्र ले बान के दगड ज्यों खगड खगडो ध्वजा धीर छचावली। शैल शृङ्गावली छोड़ि मानो ठढ़ी एकही बार ले हंस हंसा वली॥

त्रिभङ्गी॥

लक्षन शुभ लक्षन युद्ध विचक्षण रावण सों रिस छांड़ि दई। बहु बानन छगडे रिपुतन खगडे सो फिरि मगडे शोभ नई॥ यद्यपि रन पगिडत गुण गण मगिडत रिपु दल खगिडत भूलि रह्यो। तजि मन बच कायक सूर सहायक रघुनायक सों बचन कह्यो॥ ठाढ़ो रण गाजत केहु न भाजत तन मन लाजत सब लायक। सुनु श्री रघुनन्दन मुनि जन बन्दन दुष्ट निकन्दन सुख दायक॥ अब टरै न टारो मरै न मारो हैं हठि हारो धरि शायक। रावणहि न मारत देव पुकारत हैं अति आरत जग नायक॥

छप्पै॥

जेहिशर मधु मद मर्दि महा सुर मर्दन कीन्हों।
मारो कर्क सु नर्क शङ्ख हति शङ्ख जु लीन्हों।

नि:कण्टक सुर कटक करो कैटभ बपु खण्डौ ।
खर दूषन त्रिशिरा कबन्ध शिर खण्ड बिखण्डो ॥
कुम्भकरन जेहि संघरो पलन प्रतिज्ञा तो टरो ।
तेहिबाण प्राण दशमौलिके कण्ठदशौकुण्ठितकरो ॥

दोहा ॥

रघुपति पठयो आसुहीं असुहर बुद्धि निधान ।
दश शिर दशहू दिशन को बलि दै आयो बान ॥

मदन मनोहर ॥

भुव भारहि संयुतराकस के गण जाइ रसातल सों अनुराग्यो । जगमें जय शब्द समेतहि केशव राज विभीषण के शिर जाग्यो ॥ मैदानव नन्दिनि के सुख सों मिलिके सियके हिय को दुख भाग्यो । सुर दुन्दुभि शीस गजा शर रामको रावण के उर साथहि लाग्यो ॥

विजया—मन्दोदरी वाक्य ॥

जीति लिये दिगपाल सची के उसासहि देव नदी सब सूकी । बासरहू निशि देवन की नर देवन की रहे सम्पति हूकी ॥ तीनिहुं लोकन की तरुणीन

की बारि बंधी रहै दण्ड दुहूकी। सोवत श्वान शृगाल सु रावन सोवत सेज परे नर भूकी॥

तारक——रामचन्द्र बाक्य॥

अब जाहु बिभीषण रावण लैके।
सकल सबन्धु क्रिया सब कै कै॥
जन सेवक सम्पति कोष सम्हारौ।
मय नन्दिनि को सिगरो दुख टारौ॥

स्वामी की शुभ चिन्तकता का फल॥

गीतिका——भोलानाथ॥

बेताल बोल्यो कहहुं राजा बात एक सुनि लीजिये।
वर्द्धमान सुदेश सुन्दर सुनत बैन पतीजिये॥
तहं रूपसेन अनूप भूपति राज तहं को करत हैं।
नीति को अवतार जानहुं दीन को दुख हरत हैं॥
ताकी डेउढ़ी मांहिं शोर कछु होइ रह्यो।
तुरत बोलि दरवानि नृपति ने यों कह्यो॥
कहौ सत्य सब बात द्वार कह भीर है।
देखि कह्यो समुझाइ सुमति वर बीर है॥

महाराज सुनु वेद पढ़न बुध आवहीं।
धनद द्वार पर आइ वित्त बहु पावहीं॥
तिनहीं को यह शोर गयो समुझाइ के।
सुनि राजा चुपचाप रह्यो शिरु नाइ के॥
दक्षिण दिशि ते शूर वीर वर आइये।
सकल सजे हथियार सु बचन सुनाइये॥
राज द्वार पर आइ तासु ने यों कही।
खबरि करो जहं राज चाकरी हम चही॥
द्वार पाल तहं जाइ राज समुझाइ के।
आयो है एक शूर आश तुव पाइ के॥
कही नृपति ले आउ तुरत सो आइयो।
राजा कहं शिरु नाइ सु बैठक पाइयो॥
राजा पूंछो शूर रोज कह लेउगे।
कहउ मोहिं समुझाइ जो उत्तरु देउगे॥
कही वीर कर जोरि भूप सुनि लीजिये।
तोले स्वर्ण सहस्र नित्त मोहिं दीजिये॥
राजा पूंछेउ सङ्ग कितो परिवार है।
कह्यो बीरवर बहु कुटुम्बन हमार है॥

मम संग में एक पुत्र पत्नी साथ है।
एक पुत्रिका और सुनो भुव नाथ है॥
यह सुनि के सब सभा हँसी मुख फेरि के।
मांग्यो इन धन बहुत कह्यो कह हेरिके॥
कीन्हो चित्त विचार काम कह आइ है।
बोलि सुमन्त्री बात कही समुझाइ है॥
तोले स्वर्ण सहस्र नित्त प्रभु दीजियो।
दोजो याही रीति न कमती कीजियो॥
मिलन लग्यो तिहि नित्त सु सोनो हाथमें।
अर्द्ध कीन्ह तिहि दान रखो नहिं साथमें॥
आधे में ते अर्द्ध सु योगिन कहं दियो।
नित्त खरच के काज कछुक निज करि लियो॥
याही रीति सुजान करत सो सेव है।
रखा पलंग सुनित्त करै अह मेव है॥
जबहीं निशिको जाइ पलंग नृप सोवते।
जागि परैं जो कहूं बीरवर जोवते॥
रहते सदा सचेत सु स्वामी सेव में।
और नहीं कछु काज करै वह मेवं में॥

दोहा ॥

कोई जो विक्रय करै वस्तु सुधन के हेत।
सदा चकरिया आपनो तन विक्रय करि देत॥
याही ते यों चतुर कहैं यह बात है।
सेवा सबते कठिन धर्म अवदात है॥
एक समय की बात निशा थोरी गई।
मर घट में आवाज आवती एक नई॥
भूपति कहा पुकारि वीरबर है कहां।
याने उत्तर दयो स्वामि मैं हों यहां॥
कह नृप देखहु जाइ कवन यह रोवई।
आरत करत पुकार नींद मम खोवई॥
गयो बीर वर तहां जहां वह नारि है।
ताके पीछे नृपति गयो सु विचारि है॥
देखो ताने जाइ तहां एक सुन्दरी।
पहिरे भूषन लखे चन्द द्विति मन्दरी॥
तासों पूंछी बीर कहो क्यों रोवती।
शायक कैसे नैन तिन्है जल धोवती॥

कही तासु ने बात बीर सुनिलीजिये ।
राजा लक्ष्मी मोहिं आप गनि लीजिये ॥
कही बीर बर बात तु कारन कहु सबै ।
सत्य कहों सब बात सु पूंछति हो अबै ॥
राजा करत अनीति बिपति तहं आइहै ।
मैं नहिं ताके रहौं कही समुझाइ है ॥
एक मास के जात नृपति दुखु पाइहै ।
ताही दुखमें पागि निपटि मरि जाइहै ॥
ताही कारन पाइ यहां मैं रोवती ।
ताकी करि सुधि चित्त नैन दुख धोवती ॥
कही बीर वर बात यत्न कछु तासु को ।
राजा सुखमों रहैं सहित रनि वास को ॥
बोली पूरब ओर देबि कर थान है ।
ता कह तू निज पुत्र देइशिर दान है ॥
राज जिये शत वर्ष सुखहि सों गेह में ।
यह सुनि भट गृह गयो लाय मन नेह में ॥
भूपति ताके सङ्ग चल्यो गृह आइयो ।
लखिबे को तिहि धीर बीर संग धाइयो ॥

तिन निज बाम जगाइ कही यह बात है।
तू निज सुत को मोहिं देइकरि घात है॥
याके शिरके दिये भूप बचि जाइगो।
रहै हमारो धर्म अधर्म नशाइगो॥
यह सुनिकै सुत कही धर्म की रीति है।
होइ तुम्हारो काम टरै सब भीति है॥
कही सुभट यह बात बहुरि बर बामसों।
होइ सुखित सो देवि सरै सब कामसों॥
पुनि बोली तिहि बाम सुनहुं प्रिय प्रानहै।
मेरी तो गति तुही सत्य यह बान है॥
कही पुत्र सुनु जनक देह केहि काम की।
करिये निज प्रभु काज सुमति परमान की॥
ऐसे कहते जाइ भवानी गेह को।
करि पूजन बहु भांति कह्यो करिनेह को॥
नृपति जिये शत वर्ष मनावहुं ईश मैं।
ऐसे कहि एक खड्ग दियो सुतशीस मैं॥
देखि भ्रात निज घात भगिनि ताकी मरी।
मरी बाम बरबीर देर ना कछु करी॥

लखो बीरबर मैं न मरो परिवार है।
कहा द्रब्य लै करौं कियो जो बिचार है ॥
यह कहिके निज शीस काटि यों ता समै।
राजा कियो बिचार उचित यह नाहिं मैं ॥
मरो हमारे काज सकल परिवार है।
ताते नृप मन मरन बिचार्यो सार है ॥
त्योंहीं नृपने खड्ग लियो कर साथ है।
पकर्यो अम्बा आइ नृपति को हाथ है ॥
कही पुत्र बर मांगु किये साहस भले।
मांग्यो नृप बर सकल ये मम संग जी चले ॥
कही भवानी सकल प्राण ये पाइ हैं।
अमृत ल्याइ त्यहि बार दिये सु जियाइ हैं ॥
जै जै कहि सब उठे कह्यो नृप चैनहै।
बहुरि देवि सों राज कहे ये बैन है ॥
जानि साहसी शूर बीर रण धीरको।
दीन्हों आधो राज राज बर बीरको ॥
सो पूंछत बेताल नृपति तन हेरिके।
इनमें को सतवान कहो मोहि टेरि के ॥

दोहा

कहै बैन विक्रम सुमति सुनहुं बीर बेताल।
राजा को सत अधिकहै मरत रहै ततकाल॥
पुनि पूंछी बेताल ने कैसे भयो नरेश।
वृथा प्राण चारों दिये कहिये बचन सुवेश॥
सेवक को यह धर्म है करै स्वामिको काज।
ताही को यश बढ़तहै रहै जगत में लाज॥
राजा सेवक हेत लखि देन चह्यो निज जीव।
ताहीते सत अधिक भो सुनहुं सुमति कैसीव॥

यत्नसे कठिन कार्य सहजही सिद्ध होय॥

दोहा—नारायण॥

जो उपाय ते होतहै बल सों क्यों करिजात।
कनक सूत्र सों सांपको कीन्हों काग निपात॥

चौपाई॥

तब करटक दमनक सों कही।
नीकी कथा सुनों हम चही॥

दमनक वाक्य ॥

देव कुण्ड तीरथ है एकु ।
बिन्ध्याधरि गिरि दूरिन नेकु ॥
ता ऊपर वायस की जोरी ।
शाखा पर बैठे एक ठोरी ॥
रहहि रूख खोढ़र में कारो ।
सांपु सकल सांपन ते भारो ॥
वह कवई के छौंना खाई ।
पक्ष हीन बलहीनहिं पाई ॥
तब कवई कौआ सों कहे ।
पुनि अण्डन को डारो चहे ॥
स्वामी तुम छोड़हु यह तीरा ।
यहां होतहै नितउठि पीरा ॥
कारो सांपु बसत है जहां ।
बचहिं महारे चिकुला कहां ॥

दोहा ॥

दुष्टा भार्या मीत शठ उतरु टहलुआ देइ ।
सांपु साथघर बास करि मीचु हाथ गनिलेइ ॥

चौपाई ॥

पुनि बायस बोलो करि रोषु ।
भामिनि जनि डरु करु परितोषु ॥
बार बार याको अपराधू ।
सहों सहत ज्यों सूधो साधू ॥
तब बायसिनि बिहंसि के कही ।
बली शत्रु ते भागे रही ॥
तब बायस बोलो फिरि आपु ।
मेरो कहा करैगो सांपु ॥

दोहा ॥

बुधि जाके बल ताहि के निर्बुद्धी बल कोन ।
शशक हन्यो निज बुद्धिबल सिंह महाबल जोन ॥

चौपाई ॥

कह बायसिनि बात यह कैसो ।
बायस कहत सुनो है जैसो ॥
मन्दर गिरि पर एकु हरि रहई ।
नाम दुरददन्ती सब कहई ॥

पशु बध नित प्रति करते रहे।
खायो फिरि जो चहै न चहै॥
तबसबपशुमिलिविनतीकीन्हो।
सिंहहि आय यहै मति दीन्हो॥
काहे को डारहु सब मारे।
एकु एकु पशु लेहु सकारे॥
तब सिंहहु मानी यह बाता।
तब ते एकु २ नित खाता॥
वृद्ध शशा को आयो बारू।
अपने मन त्यहि कीन्ह बिचारू॥

दोहा॥

बिनती करें बिनीत ह्वै धरि जीवन की आस।
जोपै जीवन जात है कहा सिंह को त्रास॥

चैापाई॥

ताते मन्द मन्द चलि गयऊ।
जाय सिंह ढिग ठाढ़ो भयऊ॥
भूखो सिंह कहै रिसिआई।
शशक बेठि कत रह्यो लुकाई॥

शशा कहै का मेरो दोषू ।
मोपै कत कीजे प्रभु रोषू ॥
पैड़े चलि आवत हौं अहो ।
दूजे सिंह बली मोहिं गहो ॥
करी शपथ फिरि ऐहौं आजू ।
आवत हौं कीन्हें कछु काजू ॥
छलसों हो इत आवन पायो ।
अब अपनो करु तू मन भायो ॥
रिस करि सिंह शशा सों कही ।
सिंह दूसरो मारो चही ॥
चलिदिखाउ वहहै किहिठोरा ।
मारहुं देखतही बर जोरा ॥
शशक सिंह को लियो लवाई ।
कूप गहिर तब दियो दिखाई ॥
झांक्यो जाइ सिंह जब कूपा ।
तब देख्यो आपन अनरूपा ॥
जल प्रतिबिम्ब आपनो देख्यो ।
दूजो सिंह वाहि करि लेख्यो ॥

कूदि पर्यो जल भीतर जाई ।
रिस करि सिंह मुयो अकुलाई ॥
पुनि घरनी सुनु और कहानी ।
देखो भनी सुजन सज्ञानो ॥

दोहा ॥

जो कछु होइ उपाय सों सो बल ते नहिं होइ ।
हाथी साथी स्यार को रहो पङ्क में सोइ ॥

चौपाई ॥

कह कवई यह कैसी कथा ।
भाषी काग सुनो है यथा ॥
ब्रह्मारण्य बड़ो गज रहै ।
नाम कपूरतिलक सब कहै ॥
जाति कुपूत स्यार एक खोटो ।
गजको देखि अङ्ग अति मोटो ॥
सबै स्यार मिलि करहिं बिचारा ।
यह बिधि हमको देइ अहारा ॥
काहे को कहुं अनते जाई ।
चारि मास भरि बैठे खाई ॥

तिनमें एक बूढ़ हो स्याऊ।
करी प्रतिज्ञा देउं अहारू॥
जम्बुक गज समीप ले गयऊ।
करि प्रणाम भूतन शिर नयऊ॥
मधुर बानि हाथी सों कही।
दृष्टि प्रसाद राज कर चही॥
हाथी चितयो बोलु सुनायो।
कौन है क्यहि कारण आयो॥
मैं तो हों जम्बुक की जाती।
बूढ़ो मोहिं कहत हैं ज्ञाती॥
सब बनचर मिलि मोहिं पठायो।
हों तो ढिग आपुहि के आयो॥
मोसों कह्यो सबन समुदाई।
बिन राजा अब रहो न जाई॥
नीको भांति निरखिबे सही।
तुम या ठौर के राजा चही॥
जो गुण स्वामी के तन चहिये।
ते सब तुमहीं में हम लहिये॥

जो गुण स्वामी के तन चहिये ।
ते सब तुमहीं में हम लहिये ॥
जो कुलीन फिरि बड़ो प्रतापु ।
अनाधार सोई है आपु ॥
अति परबीन धर्म सों रहै ।
यहि विधि को राजा सबु चहै ॥

दोहा ॥

प्रथमहिं राजा जानिये पुनि धन धर्म बिचारि ।
बिनराजा कछु रहत नहिं धनधरती अरुनारि ॥
पृथ्वी पति आधार यह मेह दूसरो होय ।
मेह विना बरु जीजिये राज बिना नहिं कोय ॥
करत धर्म डरटोटके है परबश सब कोय ।
सांचुदया नहिं होत है विन राजा सब लोय ॥

चौपाई ॥

ताते राज चलहु अकुलाई ।
जामें लगन बीति नहिं जाई ॥
आजु तुम्हार होत अभिषेका ।
बहु बिधि बनचर जुरे अनेका ॥

यहि विधि कहि जम्बुक सब भलो ।
राज लोभ गज मन हल हलो ॥
चल्यो कपूरतिलक अकुलाई ।
जेहि मग गयो स्यार शठ धाई ॥
धावत धस्यो पङ्क में हाथी ।
ठाढ़ो हंसत स्यार हे साथी ॥
हाथी कहै मित्र कह कीजे ।
कौनो भांति राज्य अब लीजे ॥
विधि वश मेरो भयो अकाजू ।
महा पङ्क में बूड़ो आजू ॥
स्यार तबे हंसि गज सों कह्यो ।
कीच बीच सों निकस्यो चह्यो ॥
मेरी पूंछ धरहु तुम हाथा ।
बचन मानि चलिये उठि साथा ॥
जो सतसङ्ग नीच कर देई ।
साधु होइ निन्दित फल लेई ॥
गजहि अबश लखि जम्बुक धायो ।
निज कुटुम्ब कहं हांक सुनायो ॥

यन्न हमारि सफल विधि कीन्ही ।
यत्न सारजो विधि रचि दीन्ही ॥
सुनि सब स्यार हर्षि उठि धाये ।
देखि बझो गज अति सुख पाये ॥
भागि सके नहिं आन उपाई ।
सब स्यारन मिलि लीन्हों खाई ॥

दोहा ॥

याही ते हौं कहत हौं जो उपाय ते होय ।
सो बल ते नहिं होत है है जानत सब कोय ॥

चौपाई ॥

तब कवई बायस सों कही ।
करु उपाय अब जाना चही ॥
बायस कही प्रिया सुनु बात ।
हौं तोसों कहते अब ज्ञात ॥
प्रात राज तनया इत आवै ।
मज्जन करहि खेलि पुनि गावै ॥
कनकसूच जब धरै उतारी ।
तब तू चोंच ते ले अवधारी ॥

घरनी सांप के घर दे डारि।
रक्षक ताहि डारिहैं मारि॥
काक बधू कीन्हो वह मन्त्र।
सोई भयो सकल स्वातन्त्र॥
कनक सूत्र के रक्षक दौरे।
तो लों चढ़े रूख पर श्रौरे॥
कनकसूत्र खोढ़र महं देख्यौ।
ताढिग श्याम उरग अवरेख्यौ॥
पहिले सांपु सबन मिलि मार्‍यौ।
भाला भेदि भूमि महं डार्‍यौ॥
कनक सूत्र फिरि पाछे पायो।
भयो बायसी को मन भायो॥
ताते कनकसूत्र की कथा।
तुम सों कही भई है यथा॥

दोहा॥

साहस द्रव्य कुलीनता सुघर वैन किमि कोय।
धरियतुला एक ओर सबतुलहि नचातुरिसोय॥

द्यूत कर्म में हानि है——सबलसिंह ॥

सुन्दर मास दमोदर आवा ।
काल निशा दिन अति नियरावा ॥
शकुनी कर्णहि पूछ नरेशा ।
पत्र पठाय दीन प्रति देशा ॥

दोहा ॥

काल निशा जागरणहित आवैं सब भुवराय ।
द्यूत खेल खेलैं यहां करैं सभा मम आय ॥

चौपाई ॥

खेलब हम औ धर्म कुमारा ।
देखहु आय सकल शिरदारा ॥
दुर्योधन कर आयसु पाई ।
गजपुर आये सब भुवराई ॥
सुखद सिविरि पाये सब काहू ।
बहु सत्कार करत नर नाहू ॥

कुरु नन्दन तब बिदुर बोलाये ।
जाहु धर्म पहं कहि समुझाये ॥
धर्मराज गृह बिदुर सिधाये ।
तुरंग सवार साथ शत पाये ॥
चपल तुरङ्गम बिदुर सवारा ।
जात चले पाण्डव दरबारा ॥
विदुर आगमन सुनि सुखपायो ।
आगे मिलन धर्म सुत आयो ॥
बहुरि सभा ले गयो भुआरा ।
सादर सिंहासन बैठारा ॥
पुनि २ भूप रजायसु मांगत ।
प्रीति बिलोकि बिदुर अनुरागत ॥

दोहा

हृदयबिचारतनखलिखतकौरव की मतिपोच ।
हायीहरहट मद गलित नाहिंनशीलसंकोच ॥

चौपाई ॥

सुनहुं तात मम आगम काजा ।
तुमहिं बोलावत हैं कुरु राजा ॥

अभि बन्दन कहि कह्यो संदेशा ।
आये मम गृह बिपुल नरेशा ॥
दूत हेत हम कीन्ह उछाहू ।
सो तुमहूं आवहु नर नाहू ॥
इहां काल निशि जागहु आई ।
देखहु मम समाज समुदाई ॥
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता ।
कुरुपति के मन है छलताता ॥
शकुनी कर्ण सहित दुःशासन ।
चाहत तुम कहं देश निकासन ॥
यहै मनोरथ जीतन जूपा ।
कहत कहेउ यह भेद न भूपा ॥
तुमहिं परम प्रिय जानि सुनावा ।
करहु भूप जो बनइ बनावा ॥
कहत भये अस धर्मज राई ।
सुनहुं सचिव भीमादिक भाई ॥
कुरुपति के इरषा भइ भारी ।
हम कहं जीतन हेत हंकारी ॥

दोहा ॥

युद्ध युवाबश होत नहिं भ्राता करहु विचार ।
होत तासु जे तातसुनु जिहि सहाय करतार ॥

चौपाई ॥

यहकुरुपति भलि बात बिचारी ।
मानत जीति न जानत हारी ॥
विदुर बिचारि कहो म्वहि पाहीं ।
का समुझत कुरुपति मन मांहीं ॥
बोले बिदुर कहौ भलि बाता ।
हम यह भेद न जानत ताता ॥
कहा भीम मति भ्रमि कुरुराऊ ।
सो किमि जानै भाउ कुभाऊ ॥
चलहु भूप अब करहु तयारी ।
खेलब नृप गृह पांसासारी ॥
ठन समाज करि भूप बुलाये ।
कौतुक देखन को सब आये ॥
जो न नरेश चलौ तुम काली ।
कुरुपति होइ मनोरथ खाली ॥

भीम बचन सबके मन भाये।
प्रात नृपति गज बाजि सजाये॥
गये बितान पटल लदि आगे।
पटह धेनु मुख बाजन लागे॥

सोरठा॥

निकर दमामें बाज बोलें बिरद पयान के।
गर्जि उठें गजराज है हीसत रथ घर घरे॥

चौपाई॥

बिदुर समेत चढ़े नृप हाथी।
चलत भये भीमादिक साथी॥
उठे निशान चले नर नायक।
धाये बिपुल चहूं दिशि पायक॥
तुरगारूढ़ नगिन कर बालहि।
गहि कर घेरि चले भूपालहि॥
कुरुपति सुनो धर्म्म सुत आये।
आतुर लखन कुमार पठाये॥

उलका दुरद दुशासन साथा ।
नायो धर्मराज पद माथा ॥
दे अशीस नृप सहित प्रमोदा ।
बैठारे कुरुपति सुत गोदा ॥
मुक्ता माल दीन पहिराई ।
दिये बिबिधि पकवान मिठाई ॥
कीन बिदा कुरुनाथ कुमारा ।
आपु बितान बीच पगु धारा ॥

दोहा ॥

तिहि अवसर आवत भयो धर्मराज रनिवास ।
त्यागि २ पट पालकी भीतर गईं अवास ॥

चौपाई ॥

लषन समेत बिदुर इत आये ।
सकल गाथ कुरुपतिहि सुनाये ॥
कुरु रनिवास सबन सुधि पाई ।
मिलन द्रुपद तनया कहं आई ॥
सुनि आवत दुर्योधन रानी ।
चली मिलन हित सकल सयानी ॥

तजि नर वाहन सब रनिवासा ।
मिलहिं द्रौपदिहि सहित हुलासा ॥
करि सब बिधि सब कर सत्कारा ।
भांति अनेक भई जिवनारा ॥
कुरुपति बन्धुन की बरनारी ।
निज निज गवन कीन्ह व्रतधारी ॥
चलन चह्यौ दुर्योधन रानी ।
द्रुपद सुता राखा गहि पानी ॥
करन धर्म सुत की पहुनाई ।
भूरि वस्तु कुरुनाथ पठाई ॥
अशन पान करि धर्मज राजा ।
लीन बोलि द्विज साधु समाजा ॥
बैठ युधिष्ठिर भाइन लैके ।
बिप्रन सहित सुआसन देके ॥
द्रुपद सुता अरु कुरुपति रानी ।
सोहहिं पाटल कपट सयानी ॥
लगे पुरान सुनन तब भूपा ।
हरिकी कथा रसाल अनूपा ॥

सोरठा ॥

हरिकीकथा रसाल कहन लगे द्विजबिदुष वर ।
सुनत धर्म महिपाल जहं तहं दरवानी खड़े ॥

चौपाई ॥

इहां राज दुर्योधन निर्यंश ।
सञ्जयते तब कहत भयोअस ॥
अब तुम जाहु धर्म सुत पाहीं ।
भा शकुनी कर मंच सहाहीं ॥
कहहु धर्म्म सुत ते समुझाई ।
प्रात द्यूत खेलहिं इत आई ॥
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये ।
धर्म बचन कुरुपतिहि सुनाये ॥

दोहा ॥

सुनहु भूप सञ्जय कह्यो यह सुत धर्मज राय ।
स्वजन सकलकुरुपति सहितप्रातभेंटिहौंआय ॥
सबलसिंह सञ्जय बचन सुनिके कौरव नाथ ।
जात भये बिश्राम थल युवतिन वृन्दन साथ ॥

चौपाई ॥

तिहि राचो कर भयो बिहाना।
पाण्डव गये द्रोण अस्थाना।
सङ्ग भीम सुर साधु समाजा॥
नमत द्रोण पद पाण्डव राजा॥
करत दण्डवत धर्म्मज चीन्हा।
द्रोण उठाय लाय उर लीन्हा॥
दै अशीस भेटे सब भाई।
मिले द्रोण नन्दन पुनि आई॥
पूछी कुशल प्रश्ण नृप आछे।
तब गुरु कही कुशल तवपाछे॥
कहहु कुशलनिज धर्म्मकुमारा।
बोले बचन भूप श्रुतिसारा॥
नाथकुशल सबबिधि अनुगामी।
तुव अशीस बोले सुनि स्वामी॥
मांगि बिदा गुरु पद शिरुनाये।
तुरत पितामह के गृह आये॥

परसि चरण नृप द्वै करजोरा ।
अति हर्ष मन गद्गद् किशोरा ॥

दोहा ॥

पूंच युधिष्ठिर भद्र तव होइ सुआशिष दीन ।
करनीकुरुपतिकीसमुझि सजलनयनकछुकीन ॥

चौपाई ॥

बढ़ेउ युगुल तन प्रेम प्रवाहा ।
आयसु मांगि चले नर नाहा ॥
बुद्धि चक्षु के मन्दिर आये ।
पितु माता पद शीस नवाये ॥
धर्म आगमन सुनि सुख पाये ।
प्रेम प्रीति हग मति बैठाये ॥
परत चरण लखि पांचो भाई ।
बरवश भूप लिये उर लाई ॥
रहे भूपतिहि छिण धरि चारी ।
करत प्रीति मति हग बैठारी ॥
उठि धर्मज नाये पद शीसा ।
बिदा किये नृप देइ अशीसा ॥

चले समाज समेत भुआरा ।
कुरुपति के मन्दिर पगु धारा ॥
आवत देखि धर्म नर नाथा ।
उठे भूप नृप यूथप साथा ॥
मिलि अनेक बिधि करि सत्कारा ।
कुशल पूंछि आसन बैठारा ॥

दोहा ॥

भेटिबिबिधिबिधियुगुलनृपबहुआदरमलिभाय ।
धर्मराज देख्यो बहुरि रवि नन्दन गृह जाय ॥

चौपाई ॥

रबि सुत सुना धर्म सुत आये ।
बिशासेनि कहं तुरत पठाये ॥
आगे मिलत चरण गहि रहेऊ ।
चिरञ्जीव धर्मज तब कहेऊ ॥
सुत समेत हरि सुत पहं आये ।
मिलत परस्पर चख जल छाये ॥
कुशल प्रश्न पूछत म्रदुवानी ।
गे अङ्गारमती जहं रानी ॥

धर्मज देखि रानि सुख पायो ।
भीमादिक आदर बैठायो ॥
आशिष दीन विपुल सुख पाये ।
आतुर भूप विदुर गृह आये ॥
मिले कृपहि नृप अति हित तेरे ।
आवत भये बहुरि नृप डेरे ॥
खान पान करि पति जगती के ।
पुनि सोवत सिंहासन नीके ॥
रही तंबूरन की धुनि माची ।
बार मुखी बहु वृन्दन नाची ॥

दोहा ॥

कहा हांसि भीमादि सब लखि अप्सरा ललाम ।
यहि प्रकार आनन्द ते बिगत भई निशि याम ॥

चौपाई ॥

तेहि अवसर सञ्जय तहं आये ।
ले संदेश कुरु नाथ पठाये ॥
खेलन अक्ष नृपति चलु आजू ।
तुमहिं बोलावत कौरव राजू ॥

सञ्जय बचन भूप सुनि लीन्हों।
गुनेउ चित्त प्रति उत्तर दीन्हों॥
विप्र वृन्द तेहि अवसर आये।
प्रथम भूप उठि शीस नवाये॥
दीने सबन यथोचित आसन।
बहुरि आपु बैठे सिंहासन॥
गायक नृत्यक बदन टराई।
रहे चुपाइ भूपरुख पाई॥
वेद ऋचा द्विज वृन्द अलापे।
सुनि बस प्रेम सभा सद कांपे॥
गावहिं विदुष सकल गुण पूरे।
विविधि प्रकार बजाइ तंबूरे॥
होत प्रभात धर्म के जाये।
गन्धारी के सब गृह आये॥
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई।
दीन अशीष मातु सुख पाई॥

दोहा ॥

दीन्हें मध्य अनेक धरि दासी वृन्द विशाल ।
सेवक भाई सखा सन बैठे धर्म नृपाल ॥

चौपाई ॥

कनक प्रयङ्क विराजत रानी ।
पूछी कुशल प्रश्न मृदुवानी ॥
उठि नरनाह रजायसु मांगी ।
बिदा मातु पद अति अनुरागी ॥
अति बल कुरु नन्दन के भाई ।
सब के भवन धर्म सुत जाई ॥
भेटत सबहि गये दिन चारी ।
आई काल निशा भयकारी ॥
दीपक श्राद्ध धर्म सुत कीन्हा ।
विपुल द्रव्य महिदेवन दीन्हा ॥
कीन्हेंउ श्राद्ध बुद्धि दृग एका ।
धरि दीन्हे मणि दीप अनेका ॥
गजपुर प्रगटि रही उजियारी ।
भयो विनाश निशा तम भारी ॥

दोहा ॥

जात भये ताही समय सभा भवन कुरु नाथ ।
विकरण दु:शासन करण शैल शाकुनी साथ ॥

चौपाई ॥

दिये किङ्करन डासि गलीचा ।
अद्भुत बसन परे बिच बीचा ॥
बैठि गये कुरु नायक जाई ।
आवन लागे नृप समुदाई ॥
बाहुलीक गङ्गाधर आये ।
भूरिश्रवा वृषसेनि सुहाये ॥
युधामन्यु कम्बूक उलूका ।
मगहा बन्धु चतुर नहिं मूका ॥
सोमदत्त शशिबिन्दु सुवेशा ।
सैंधव पति अरु शल्य नरेशा ॥
आये नृपति सहस्र हजारा ।
रहत सदा कौरव दरबारा ॥
कौरव कीरति निज महि हेतू ।
अचल करै कौरव कुल केतू ॥

आये सभा वकील घनेरे ।
जे हितकार नरेशन केरे ॥
कौरव केतु अष्ट शत भाई ।
आये साथ सुभट समुदाई ॥

सोरठा ॥

तेहि अवसर गे आय वेद्द पाणि गण गुण निपुन ।
दीन सभा बैठाय यथा उचित आसन सबे ॥

दोहा ॥

द्रोण कृपा भीषम विदुर आवत लखि कुरुनाथ ।
सहित सभा संभ्रम उठे बैठारे गहि हाथ ॥

चौपाई ॥

आये बहु मङ्गन पुर बासी ।
सचिव महाजन निकट निवासी ॥
सबहि नरेश कीन सत्कारा ।
आवत देख्यो द्रोण कुमारा ॥
करि आदर अनेक नर नाहू ।
कहा धर्म सुत पहं तुम जाहू ॥

वेतपाणि तब खबरि जनावत ।
सहित सहाय धर्म सुत आवत ॥
तबलग धर्मराज पग धारा ।
जहं तहं सब नृप करत जुहारा ॥
मिले अग्र आतुर दुर्योधन ।
बैठारे करि विविधि प्रबोधन ॥
अति प्रताप कुन्ती के बालक ।
सोहत सभा प्रजा जन पालक ॥
तेहि अवसर कुरुपति रुख पाये ।
पांसासारि दुशासन लाये ॥
धरि दीन्हे अजात अरि आगे ।
कर गहि भीम विलोकन लागे ॥
सो कुरुपति निज हाथ उसाई ।
लिये धर्म सुत हाथ उठाई ॥
फरके अशुभ अङ्ग भुज बांये ।
उर थर हरेउ छींक समुहांये ॥

सोरठा ॥

दियेउ धर्मसुत डारि परेउ न पांसा जो कहा ।
शकुनी लीन संभारि फरकेउ कहिनहिं पउ परा ॥

चौपाई ॥

धर्मराज पांसा महि डारे ।
बोले बचन नयन अरुणारे ॥
खेल हमार ओर कुरुपति ते ।
शकुनी तें खेलत केहि मति ते ॥
कहेउ कुमंच लागि श्रुति माहीं ।
युद्ध युवा लायक तैं नाहीं ॥
शकुनी लज्जित निपट सभामा ।
कुरुपति हृदय क्रोध तब जामा ॥
हृदय क्रोध ऊपर छल कीन्हा ।
बिहंसि भूप प्रति उत्तर दीन्हा ॥
शकुनी कह हम नृप बेठारा ।
यामें कछु न अकाज तुमारा ॥
शकुनी जो हारहि हम देहीं ।
अङ्गीकार जीति करि लेहीं ॥

हम हारहिं शकुनी के हारे।
नहिं अनुचित नृप हारि विचारे॥
जो निजु हारि नृपति कछु जानहुं।
निहचों किङ्कर तुम कोउ आनहुं॥

सोरठा॥

हम खेलहिं तेहि साथ होहिं नीच सब भांतिसों।
कहेउ वचन कुरुनाथ शकुनी तो शिर मोर मम॥
धरो भार निज शीस बेठारो किन सेवकन।
हमहिन ओछि महीश हम खेलब नृप सदृश महं॥

दोहा॥

धर्मराज सन भीम तब कहन लगे कर जोरि।
छल है जुवा न खेलिये सुनिये बिनती मोरि॥

चौपाई॥

चलि नरेश कीजे निज काजू।
शकुनी ते खेलिये न राजू॥
अतिहित भीमसेन की बानी।
जमल बन्धु पारथ मन मानी॥

वर्जत सकल धर्म महराजहि ।
सोन सुहात बात कुरु राजहि ॥
भीष्मादिक सब विधिहिं मनावहिं ।
जनि पांसा अब धर्म चलावहिं ॥
होनहार के सकहि मिटाई ।
बोले धर्मराज सुनु भाई ॥
जो यह कहि कुरुनायक बाता ।
छल विहीन लागत मोहि ताता ॥
क्षत्री वंश काछ हम काछे ।
युद्ध जुवा पग धरहिं न पाछे ॥
एकदिशि काल प्रचारै जबहीं ।
क्षत्रि धर्म धरि मुरै न तबहीं ॥
तिहिमा फिरि आपुसि कर बीचू ।
पीछे पांउ धरै सो नीचू ॥

दोहा ॥

अस कहि धर्म नरेश तब पांसा लीन्ह उठाय ।
दशा सङ्कटा की कठिन रही निपट नियराय ॥

चौपाई ॥

मन्द वर्ष पति गत बल भयऊ ।
रवि कुदृष्टि मूरति थल गयऊ ॥
सबग्रह अशुभ भये थलही थल ।
वर्षपवर्ष चयोदश निर्ब्बल ॥
कहहिं विदुष जन सबहि सगिष्ठा ।
महाराज दिन तुमहिं अरिष्ठा ॥
जब अस बचन सुनहिं कुरु नायक ।
लागहि बचन मनहुं डर शायक ॥
भावीवश नृप मनहिं न आवा ।
भाषि दांव नृप अघ चलावा ॥
पुनि शकुनी कर लीन्ह उठाई ।
करया कहा कुरुपति सुख पाई ॥
धर्मज वृथा न बड़ो श्रम कीजे ।
पांसा में कुछ होड़ बदीजे ॥
काढ़ि कंठते गज मणि माला ।
सो धरि दीन धर्म्म महिपाला ॥

हरित माल मणि कुरुपति राखी ।
पांसा चलन लगे बल भाखी ॥
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे ।
कहत परत सो बिनहिं बिचारे ॥
होत जीति कुरुनायक केरी ।
हारे धर्मज वस्तु घनेरी ॥

दोहा ॥

ताही समय बोलाय पुनि निज कुरुनाथ दिवान ।
आयो आयसु मानि सो परम प्रपञ्च निधान ॥

चौपाई ॥

हारि जीति जो होइ हमारी ।
सो तुम लिखत जाउ सम्भारी ॥
आयसु दीन्हों कुरुपति जोई ।
लागो करन शूद्र पति सोई ॥
रहे जो धर्मज के संघ भीरा ।
जीति लिये मुक्ता मणि चीरा ॥
मोती रतन जवाहिर जेते ।
मूंगा कञ्चन कोश समेते ॥

शकुनी कपट अक्ष बल जीते।
भ्रम वश धर्मज भे सुख रीते॥
जेती वस्तु धर्म गृह राखो।
बोलहि विपुल भूमिपति साखो॥
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये।
जीति देखि कुरु गण सुख पाये॥
परत न धर्मराज के पांसे।
थकित देखि सब लोग तमासे॥
आदि बरादि लोह अरु चांदी।
रहेउ न शेष ताम्र कांसादी॥
द्रव्य जो होत धातु घट दोऊ।
रहेउ न धर्मराज गृह सोऊ॥

दोहा॥

शकुनी अक्ष संभारिके पुनि लीन्हें निजुहाथ।
कपट भेद मह दक्ष अति पक्ष धरे कुरुनाथ॥

चौपाई॥

अष्ट धातु आयुध भयकारे।
क्षण महं सकल धर्म सुत हारे॥

तर्कश धनुष कवच दस्ताना ।
चर्म त्रिशूल कराल कृपाना ॥
शक्ति कराल अश्व सब चीन्हें ।
प्रथक प्रथक धर्मज धरि दीन्हें ॥
ताते अक्ष शकुनि कर धारी ।
यहि विधि गये धर्म सुत हारी ॥
बाढ़ा रोष धर्म सुत अङ्गा ।
धरो सकल दल नृप चतुरङ्गा ॥
पुनि शकुनी छल अक्ष चलाये ।
कोरे कागज जीति लिखाये ॥
धरे भूप महिषी गण गाई ।
जीते शकुनी अक्ष चलाई ॥
व्याघ्र कुरङ्ग शृगाल शशादी ।
कानन नर बानर चित्तादी ॥
पक्षी अति विचित्र बहु भांती ।
रङ्ग २ के अगणित जाती ॥
कनक पींजरन सोहत पांती ।
लखि शोभा भारती लजाती ॥

दोहा ॥

नृप अस अनुचर सकल सो सेवहिं खग मृगवृन्द ।
पृथक नाम कहि धर्म सुत धरे बिगत आनन्द ॥

चैापाई ॥

शकुनी करते पांशा डारे ।
धर्म हारि सब लोग पुकारे ॥
वाहन रथ शिविका महिपाला ।
उष्ट्र महिषा सकल विशाला ॥
एक २ भिन्न २ धरि दीन्हा ।
शकुनी जीति कपट बल लीन्हा ॥
धरेउ नरेश तुरङ्गम सामा ।
कहेउ पृथक शाला पति नामा ॥
यहि प्रकार धर्मज धरि बाजी ।
हारे सकल तुरङ्गम ताजी ॥
लखि आपन सब भांति बनाऊ ।
रोम रोम हर्षे कुरुराऊ ॥
धर्मज नयन वाम कर फरके ।
भय वश अङ्ग धका धक धरके ॥